

(स्व०) सिद्धान्ताचार्य पं० फूलचन्द्र शास्त्री

एक परिचय



(Late) Siddhantacharya
Pandit Phoolchandra Shastri

An Introduction

Siddhantacharya Pandit Phoolchandra
Shastri Foundation
Roorkee - 247 667

एक परिचय

पूज्य पंडितजी का जन्म ११ अप्रैल १६०१ को जिला ललितपुर के एक गाँव सिलावन में हुआ था। आर्थिक रूप से कठिन परिस्थितियों में जीवन की विषमताओं को झेलते हुये, पूज्य पं० जी ने जैन दर्शन रूपी आत्मज्ञान की चरम ऊँचाईयों को प्राप्त किया। उनके द्वारा की गयी जैन दर्शन एवं साहित्य की सेवा का दूसरा उदाहरण मिलना दुर्लभ है। इनके समकालीन स्व० पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री, पं० जगन्मोहनलालजी शास्त्री एवं पं० फूलचन्द्र शास्त्री रत्नत्रयी के नाम से विख्यात रहे हैं। स्व० पं० कैलाशचन्द्रजी ने लिखा है कि "हम तो उन्हीं के अनुवादों को पढ़कर सिद्धांत ग्रंथों के ज्ञाता बने हैं।" श्री पं० जगन्मोहनलाल जी के शब्दों में "उम्र में तो वे हमसे चार माह बड़े हैं, परन्तु ज्ञान में तो सैकड़ों वर्ष बड़े हैं।"

स्व० पं० जी का सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन अनेक आंदोलनों से जुड़ा रहा, जिनमें कई की शुरुआत तो उन्होंने स्वयं की। स्वाधीनता से पहले वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से सक्रिय रूप से जुड़े रहे। वे बीना, सागर, सोलापुर तथा अमरावती जिला कांग्रेस के पदाधिकारी रहे। वे अमरावती में कांग्रेस के संयुक्त मंत्री रहे। वे यवतमाल, पूना, एवं नातेपुते के कांग्रेस अधिवेशन में भी सम्मिलित हुये। भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया और १६४१ में जेल भी गये। विदेशी वर्स्तों के परित्याग आंदोलन में भी हिस्सा लिया और आजीवन खादी पहनी। स्वतंत्रता मिलने के बाद उन्होंने राजनीतिक जीवन छोड़ दिया एवं पूर्ण रूप से साहित्य साधना में लगे रहे।

सामाजिक आंदोलनों के द्वारा जैन समाज में व्याप्त अनेक कुरीतियों तथा विषमताओं का उन्होंने विरोध किया। इनमें प्रमुख हैं दस्साओं को मंदिर प्रवेश का अधिकार दिलाना, गजरथों में धर्म के नाम

पर किये जा रहे अनावश्यक खर्च का विरोध तथा उनके स्थान पर ज्ञान रथ चलाये जाने का समर्थन। २६ जनवरी १९५० से हरिजन मंदिर प्रवेश बिल लागू हुआ, जिसका व्यापक विरोध हुआ। स्व० पं० जी ने अपनी लेखनी के द्वारा इस बिल का जोरदार समर्थन किया और यह याद दिलाया कि जैन संस्कृति वर्ण व्यवस्था को स्वीकार ही नहीं करती।

अपने जीवन काल में स्व० पं० जी ने अनेक संस्थाओं की स्थापना की तथा उनके उन्नयन में लगे रहे। इनका तथा उनकी साहित्य सेवा का संक्षिप्त परिचय नीचे प्रस्तुत है। जैन दर्शन के तीन सिद्धान्त ग्रन्थ प्रमुख हैं, षट्खण्डागम, कसायपाहुड तथा महाबन्ध। ये ग्रन्थ सैकड़ों वर्षों से ताड़पत्रों पर प्राकृत भाषा में लिपिबद्ध करके मंदिरों में बंद रखे थे। इनको हिन्दी में उपलब्ध कराने का मुख्य श्रेय पं० जी को ही है। इन ग्रन्थों का उनके समान अधिकारी विद्वान अन्य कोई नहीं हुआ।

स्वभाव से पं० जी अत्यन्त सरल तथा सादगी की प्रतिमूर्ति थे। उनको अपने किये कार्यों का लेशमात्र भी अहंकार नहीं रहा। अत्यन्त उदार प्रवृत्ति के पं० जी किसी की भी सहायता में तत्पर हो जाते थे। अनेकानेक छात्रों को उन्होंने सहायता दी या, दिलवायी और उनका जीवन बनाया। स्वाभिमानी इतने कि किसी भी दबाव के आगे झुके नहीं। सन् १९५० से तो उन्होंने स्वतंत्र रहने का निर्णय लिया और साहित्य साधना में ही अपने को अर्पित कर दिया।

- (१) पिता: स्व. सिंघई दरयावलाल जी जैन
- (२) माता: स्व. श्रीमती जानकी बाई
- (३) जन्मतिथि: ११ अप्रैल १९०९ ई.
- (४) जन्मस्थान: सिलावन, जिला ललितपुर (उ.प्र.)
- (५) विवाह: सन् १९२३ ई.
- (६) धर्मपत्नी: श्रीमती पुतली बाई

र ज्ञान
र प्रवेश
अपनी
ह याद
रती ।

ओं की
साहित्य
सेद्धान्त
सैकड़ों
बंद रखे
है । इन
आ ।

मूर्ति थे ।
अत्यन्त
जाते थे ।
उनका
के नहीं ।
साहित्य

(७) **शिक्षा:** विशारद श्री महावीर दिगम्बर जैन पाठशाला,
साढूमल, जिला ललितपुर, उ.प्र. १६२० ई., सिद्धांत
शास्त्री, श्री गोपाल दिगम्बर जैन विद्यालय, मुरैना
१६२१-२२ ई.

(८) **अध्यापन एवं अन्य कार्य:**

१. प्राध्यापक, जैन दर्शन, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय तथा
स्याद्वाद दिगम्बर जैन महाविद्यालय, वाराणसी १६२४-१६२८
तक
२. बीना महाविद्यालय में प्रधानाध्यापक, १६३० के आसपास
३. सह-सम्पादक, षट्खण्डागम, जैन साहित्योद्धारक निधि
विदिशा, म.प्र., स्थान: अमरावती, महाराष्ट्र, १६३७-१६४०
४. सम्पादक, कसायपाहुड, श्री दिगम्बर जैन संघ, मथुरा,
स्थान: १६४१-८३ ई. तक। पश्चात् कहीं भी नौकरी न
करने का निश्चय, परन्तु जिनागम की सेवा अबाध रूप से
जारी ।

(९) **राजनीतिक एवं सामाजिक सेवायें:**

१. १६२६-४२ तक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सक्रिय सदस्य
२. १६२८-३३ तक बीना एवं सागर जिला कांग्रेस के
पदाधिकारी
३. १६३३-३८ तक सोलापुर जिला कांग्रेस के पदाधिकारी
४. १६३८-४० तक अमरावती कांग्रेस के संयुक्त मंत्री
५. १६४१ में कारावास
६. दस्साओं को परवार सभा (कुरावली अधिवेशन) द्वारा मंदिर
प्रवेश का अधिकार दिलाना ।

७. गजरथों आदि में अनावश्यक खर्च का विरोध तथा दान का जिन वाणी तथा साहित्य के प्रचार-प्रसार में उपयोग का समर्थन किया ।

(१०) प्रमुख सम्मान व पुरस्कार

१. अध्यक्ष, १६५५, अखिल भारतवर्षीय दि. जैन विद्वत् परिषद्, द्रोणागिरि ।
२. सन् १६६२ में जैन सिद्धात् भवन, आरा की हीरक जयन्ती के उपलक्ष्य में बिहार के तत्कालीन राज्यपाल डा. अनन्त शयनम अयंगार द्वारा "सिद्धान्ताचार्य" की उपाधि प्रदान की गयी ।
३. सन् १६७४ में भगवान महावीर के २५००वें निर्वाण महोत्सव पर वीर निर्वाण भारती द्वारा तत्कालीन उपराष्ट्रपति डा. वी. डी. जत्ती के कर कमलों से "सिद्धान्तरत्न" की उपाधि प्रदान की गयी ।
४. सन् १६८५ में आचार्य श्री विद्यानंदजी महाराज के सानिध्य में आयोजित एक समारोह में एक वृहद अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट कर सम्मान किया गया ।
५. सन् १६८७ में अखिल भारतवर्षीय दि. जैन महासंघ द्वारा श्री महावीरजी में चाँदी का प्रशस्ति पत्र भेंट किया गया ।
६. प्रथम राष्ट्रीय प्राकृत सम्मेलन, बैंगलौर, १६६० के अवसर पर स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी के सानिध्य में प्राकृत ज्ञान भारती पुरस्कार प्रदान किया ।
७. अखिल भारतवर्षीय मुमुक्षु समाज द्वारा जयपुर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा १६६० के अवसर पर १ लाख रु. की राशि से सम्मान किया गया ।

(११) संस्थापित संस्थायाँ

१. अन्यतम संस्थापक तथा कार्यकारी प्रथम संयुक्त मंत्री, १९४४ अखिल भारतवर्षीय दि० जैन विद्वत परिषद।
२. संस्थापक सदस्य एवं मंत्री, १९४६, श्री सन्मति जैन निकेतन, नरिया, वाराणसी
३. संस्थापक सं. मंत्री एवं ग्रन्थमाला संपादक, १९४४, श्री गणेश प्रसाद वर्णी जैन ग्रन्थमाला, वाराणसी।
४. संस्थापक एवं सदस्य, १९४६, श्री गणेश वर्णी दि. जैन इंटर कॉलेज, ललितपुर, उ.प्र.
५. संस्थापक, १९७१, श्री गणेश वर्णी दि. जैन (शोध) संस्थान, वाराणसी

पं० फूलचन्द्र जी शास्त्री की महत्वपूर्ण रचनायेँ

मौलिक रचनायेँ

१. जैन धर्म और वर्ण व्यवस्था – भारतवर्षीय दि.जैन परिषद, दिल्ली, १९४५
२. विश्वशान्ति और अपरिग्रहवाद – श्री गणेशप्रसाद वर्णी ग्रन्थमाला, वाराणसी, १९४६
३. जैन तत्त्वमीमांसा – अशोक प्रकाशन मन्दिर, वाराणसी, १९६०
४. जैन तत्त्वमीमांसा (संशोधित तथा परिवर्द्धित)
अशोक प्रकाशन मंदिर, वाराणसी, १९७८;
(तृतीय संशोधित संस्करण) सि०पं० फूलचन्द्र शास्त्री फाउंडेशन, रुड़की, १९६६
५. वर्ण, जाति और धर्म – भारतीय ज्ञानपीठ, १९६३ (अनेकों संस्करण प्रकाशित)

६. जैन तत्व समीक्षा का समाधान – पं० टोडरमल स्मारक ट्रस्ट,
जयपुर, १९८७
७. अकिंचित्कर, एक अनुशीलन – अशोक प्रकाशन मंदिर, वाराणसी,
१९६०
८. परवार जैन समाज का इतिहास – भारतवर्षीय दि० जैन परवार
सभा, जबलपुर, १९६२

सम्पादित पत्रिकायें

१. शान्ति-सिन्धु – आचार्य शान्ति सागर सरस्वती भवन, नातेपुते
(सोलापुर) सन् १९३५–३७
२. ज्ञानोदय – भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, सन् १९४६–५२

सम्पादित/अनुवादित/टीकाकृत ग्रन्थ

१. प्रमेयरत्नमाला – चौखम्बा संस्कृत सीरिज, बनारस, १९२८ ई०
२. आलापपद्धति – श्री सकल दि० जैन पंचान, नातेपुते (सोलापुर),
१९३४ ई०
३. धवला खण्ड १, भा० १, पुस्तक १, जैन साहित्य उद्घारक फण्ड,
अमरावती, १९३६
४. धवला खण्ड १, भा० २, पुस्तक ३, जैन साहित्य उद्घारक फण्ड,
अमरावती, १९४१
५. धवला खण्ड १, भा० ३, ४, ५ पुस्तक ४, जैन साहित्य उद्घारक
फण्ड, अमरावती, १९४२
६. जयधवला १ श्री भारतर्षीय दि० जैन संघ, चौरासी, मथुरा, १९४४
७. जयधवला २ श्री भारतर्षीय दि० जैन संघ, चौरासी, मथुरा, १९४८
८. सप्ततिकाप्रकरण (हिन्दी अनुवाद सहित), आत्मानन्द जैन प्रचारक
पुस्तकालय, आगरा, १९४८
९. धवला, पुस्तक ६ – जैन साहित्य उद्घारक फंड, अमरावती, १९४६

१०. तत्वार्थ सूत्र (हिन्दी अनुवाद, भाष्य सहित), गणेशप्रसाद वर्णा जैन ग्रन्थमाला, वाराणसी, १९५०; नया संशोधित संस्करण, श्री गणेश वर्णा संस्थान, १९६१
११. पंचाध्यायी (हिन्दी अनुवाद), गणेशप्रसाद वर्णा जैन ग्रन्थमाला, वाराणसी, १९५०
१२. महाबन्ध, पुस्तक २, — भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, फरवरी, १९५३
१३. महाबन्ध, पुस्तक ३, — भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, फरवरी, १९५४
१४. धवला, पुस्तक १०, — जैन साहित्य उद्घारक फंड, अमरावती, १९५४
१५. धवला, पुस्तक ११, — जैन साहित्य उद्घारक फंड, अमरावती, १९५५
१६. धवला, पुस्तक १२, — जैन साहित्य उद्घारक फंड, अमरावती, १९५५
१७. धवला, पुस्तक १३, — जैन साहित्य उद्घारक फंड, अमरावती, १९५५
१८. जयधवला ३, — श्री भारतवर्षीय दिं० जैन संघ, चौरासी, मथुरा, १९५५
१९. जयधवला ४, — श्री भारतवर्षीय दिं० जैन संघ, चौरासी, मथुरा, १९५६
२०. जयधवला ५, — श्री भारतवर्षीय दिं० जैन संघ, चौरासी, मथुरा, १९५६
२१. महाबन्ध, पुस्तक ४, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, काशी, १९५६
२२. महाबन्ध, पुस्तक ५, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, काशी, १९५६
२३. महाबन्ध, पुस्तक ६, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, काशी, १९५७
२४. ज्ञानपीठ पूजांजलि—भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, १९५७, द्वि सं० १९६६, तृ० सं० १९७७, च०स० १९८२
२५. धवला, पुस्तक १४—जैन साहित्य उद्घारक फंड, कार्यालय, विदिशा, १९५७
२६. धवला, पुस्तक १५—जैन साहित्य उद्घारक फंड, कार्यालय, विदिशा, १९५७

२७. धवला, पुस्तक १६—जैन साहित्य उद्धारक फंड, कार्यालय, विदिशा, १६५७
२८. जयधवला, पुस्तक ६ — श्री भारतवर्षीय दिं० जैन संघ, चौरासी, मथुरा, १६५८
२९. जयधवला, पुस्तक ७ — श्री भारतवर्षीय दिं० जैन संघ, चौरासी, मथुरा, १६५८
३०. महाबन्ध, पुस्तक ७ — भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, काशी, १६५८
३१. सर्वार्थसिद्धि — (संपादन व अनुवाद) विस्तृत प्रस्तावना के साथ, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, १६६०; तृतीय संशोधित संस्करण, १६८५
३२. जयधवला, पुस्तक ८ — श्री भारतवर्षीय दिं० जैन संघ, चौरासी, मथुरा, १६६१
३३. जयधवला, पुस्तक ६ — श्री भारतवर्षीय दिं० जैन संघ, चौरासी, मथुरा, १६६३
३४. समयसारकलश (भावार्थ सहित)—श्री दिं०जैन स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट, सोनगढ़, १६६४
३५. कानजी स्वामी अभिनन्दन ग्रन्थ—दिं० जैन मुमुक्षु मण्डल, बम्बई १६६४
३६. खनिया तत्त्व—चर्चा, पुस्तक १—आचार्यकल्प पं० श्री टोडरमल ग्रन्थमाला, जयपुर १६६७
३७. खनिया तत्त्व—चर्चा, पुस्तक २—आचार्यकल्प पं० श्री टोडरमल ग्रन्थमाला, जयपुर १६६७
३८. जयधवला, पुस्तक १० — श्री भारतवर्षीय दिं० जैन संघ, चौरासी, मथुरा, १६६७
३९. जयधवला, पुस्तक ११ — श्री भारतवर्षीय दिं० जैन संघ, चौरासी, मथुरा, १६६८

४०. सम्यग्ज्ञान—दीपिका (संपादन व अनुवाद) —श्री दिं जैन मुमुक्षु
मण्डल, भावनगर १६७०, वी० नि० सं० २४६६
४१. जयधवला, पुस्तक १२ — श्री भारतवर्षीय दिं जैन संघ, चौरासी,
मथुरा, १६७१
४२. जयधवला, पुस्तक १३ — श्री भारतवर्षीय दिं जैन संघ, चौरासी,
मथुरा, १६७२
४३. धवला पुस्तक १ — जीवराज जैन ग्रन्थमाला, संस्कृति संरक्षक संघ,
सोलापुर, १६७३
४४. धवला पुस्तक २ — जीवराज जैन ग्रन्थमाला, संस्कृति संरक्षक संघ,
सोलापुर, १६७६
४५. लब्धिसार—क्षपणासार—श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम, अगास, १६८०
४६. आत्मानुशासन — श्री गणेशवर्णी दि. जैन संस्थान, वाराणसी, १६८३
४७. जयधवला, पुस्तक १४ — श्री भारतवर्षीय दिं जैन संघ, चौरासी,
मथुरा, १६८३
४८. जयधवला, पुस्तक १५ — श्री भारतवर्षीय दिं जैन संघ, चौरासी,
मथुरा, १६८४
४९. धवला, पुस्तक १ — (पुनःसंशोधन व सम्पादन)—जीवराज जैन
ग्रन्थमाला, सोलापुर १६८०
५०. धवला, पुस्तक २ — (पुनःसंशोधन व सम्पादन)—जीवराज जैन
ग्रन्थमाला, सोलापुर १६८१
५१. धवला, पुस्तक ३ — (पुनःसंशोधन व सम्पादन)—जीवराज जैन
ग्रन्थमाला, सोलापुर १६८३
५२. धवला, पुस्तक ४ — (खण्ड १, पुस्तक ४, भा० ३—४—५) १६८४
५३. जयधवला, पुस्तक १६ — श्री भारतवर्षीय दिं जैन संघ, चौरासी,
मथुरा १६८८

अन्य महत्वपूर्ण लेख

१. जैन धर्म (अप्रकाशित)
२. हिंसा और अहिंसा (ज्ञानोदय मार्च १६५१)
३. विश्वशान्ति और अपरिग्रहवाद (ग.व.ग्रन्थमाला प्रकाशन वी. नि. २४७३)
४. जैनधर्म और वर्ण व्यवस्था (भा०दि०जैन परिषद, पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली १६४५)
५. देव—पूजा ('शान्ति सिन्धु', फरवरी १६३७)
६. गुरुपास्ति ('शान्ति सिन्धु', मार्च १६३७)
७. स्वाध्याय ('शान्ति सिन्धु', मार्च १६३७)
८. संयम ('शान्ति सिन्धु', अप्रैल १६३७)
९. तप ('शान्ति सिन्धु', अप्रैल १६३७)
१०. दान ('शान्ति सिन्धु', मई १६३७)
११. सम्यगदर्शन ('ज्ञानोदय', अक्टूबर १६५०)
१२. स्वावलम्बी—जीवन का सच्चा मार्ग ('ज्ञानोदय', सितम्बर १६५०)
१३. साधु और उनकी चर्या (आत्मानुशासन की प्रस्तावना)
१४. मुनि और श्रावक धर्म (ज्ञानपीठ पूळजांजलि की प्रस्तावना)
१५. जैनदर्शन का हार्द ('तुलसी प्रज्ञा', जुलाई, सितम्बर १६८२)
१६. कार्य—कारणभाव—मीमांसा (जैनतत्व—मीमांसा)
१७. अनेकान्त और स्याद्वाद (जैनतत्व—मीमांसा)
१८. भावमन सम्बन्धी वाद और खुलासा ('शान्ति सिन्धु' सितम्बर १६३७)
१९. भावमन और द्रव्यमन ('शान्ति सिन्धु' जनवरी १६३७)
२०. महाबंध : एक अध्ययन (आ० शान्तिसागर जन्मशताब्दी सृति ग्रंथ)

२१. बन्धका प्रमुख कारण : मिथ्यात्व (जैनतत्व-मीमांसा)
२२. श्रवण-परम्परा का दर्शन ('जैन सन्देश' शोधांक, दिसम्बर १९४१)
२३. केवली जिन कवलाहार नहीं लेते (जैनसिद्धान्तभास्कर, जनवरी १९४६)
२४. षट्कारक-व्यवस्था ('सन्मति सन्देश', जुलाई १९७३)
२५. स्वभाव-परभाव-विचार ('सन्मति सन्देश', जुलाई १९७३)
- ### इतिहास तथा पुरातत्व
१. शुतधर-परिचय (कानजी स्वामी अभिनन्दन ग्रन्थ),
 २. सम्यक् शुत-परिचय (कानजी स्वामी अभिनन्दन ग्रन्थ),
 ३. अंगश्रुतके परिप्रेक्ष्य पूर्वगत श्रुत ('तुलसी प्रज्ञा' खण्ड ६-अंक ६)
 ४. ऐतिहासिक आनुपूर्वी में कर्म-साहित्य (अप्रकाशित)
 ५. पौराण (परवार), अन्वय (अप्रकाशित)
 ६. सिद्धक्षेत्र कुँडलगिरि (अप्रकाशित)
 ७. अहारक्षेत्र : एक अध्यन (वैभवशाली अहार)
 ८. श्री जिन तारणतरण और उनकी कृतियाँ (ज्ञानसमुच्छ्वासार प्रस्तावना)
 ९. अतिशय क्षेत्र निसईजी (अप्रकाशित)
- ### अनुसन्धान तथा शोधप्रक
१. कषायप्रामृत दिगम्बर आचार्यों की ही कृति है (सन्मति सन्देश, जुलाई १९७१)
 २. तत्वार्थसूत्र और उसकी टीकाएं (आचार्य शान्तिसागर जन्मशताब्दी समृति ग्रन्थ)
 ३. समयसार कलशकी टीकाएं (समयसार कलश की प्रस्तावना)

४. पुरुषार्थसिद्धयुपाय : एक अनुशीलन (अप्रकाशित)
५. जैन सिद्धान्तदर्पण : एक अनुचिन्तन (गुरु गोपालदास बरैया समृति ग्रन्थ १६६७)
६. तेरानवे सूत्रमें 'संजद' पद (अप्रकाशित)
७. सत्तातिका प्रकरण : एक विवेचनात्मक अध्ययन (सत्तातिका प्रकरण, प्रस्तावना)

समाज एवं संस्कृति

१. जैन समाज की वर्तमान सांस्कृतिक परम्परा (भाठदि०जैन विद्वत्परिषद रजत-जयन्ती पत्रिका)
२. जिनागम के परिप्रेक्ष्य में जिनमंदिर प्रवेश (वर्ण जाति और धर्म)
३. सोनगढ़ और जैनतत्त्वभीमांसा ('सन्मति सन्देश', मार्च १६७३)
४. धर्म और देवद्रव्य ('शान्ति सिन्धु', सितम्बर वी.नि० २४६२)
५. मूलसंघ शुद्धाम्नायका दूसरा नाम तेरापंथ है (अप्रकाशित)
६. वर्ण व्यवस्था का आन्तर रहस्य ('ज्ञानोदय', अगस्त १६४६)
७. महिलाओं द्वारा प्रक्षाल करना योग्य नहीं (अप्रकाशित)
८. शिक्षा और धर्म का मेल ('शान्ति सिन्धु', सितम्बर १६३७)
९. अध्यात्म-समाजवाद ('ज्ञानोदय', जुलाई १६४६)
१०. बुन्देलखण्ड का सांस्कृतिक वैभव ('सन्मति सन्देश', सितम्बर १६७२)
११. महिला मुक्ति-गमन की पात्र नहीं (अप्रकाशित)

पत्रकारिता एवं विविध

१. आज का प्रश्न ('शान्ति सिन्धु', १६३६)
२. श्री वीरस्वामी का जन्म और उनके कार्य ('शान्ति सिन्धु', १६३७)

३. धवलादि ग्रंथों के उद्घार का सत्प्रयत्न और उसमें बाधाएं ('शान्ति सिन्धु', १९३७)
४. भ० महावीर स्वामी की जयंती मनाइयें ('शान्ति सिन्धु', १९३७)
५. फलटणके बीसाहुंबड पंचों के नाम पत्र ('शान्ति सिन्धु', १९३७)
६. समाज का दुर्भाग्य ('शान्ति सिन्धु', १९३७)
७. हरिजन मंदिर प्रवेश चर्चा ('ज्ञानोदय', सितम्बर १९४६)
८. महावीर जन्मदिन ('ज्ञानोदय', अप्रैल १९५०)
९. सम्प्रदाय जाति और प्रान्तवाद ('ज्ञानोदय', जुलाई १९५०)
१०. सेवा व्रत ('ज्ञानोदय', सितम्बर १९५०)
११. अहिंसा का प्रतीक रक्षाबन्धन ('ज्ञानोदय', सितम्बर १९५०)
१२. महावीर निर्वाण दिन : दीपावली ('ज्ञानोदय', नवम्बर १९५०)
१३. भावना और विवेक ('ज्ञानोदय', दिसम्बर १९५०)
१४. चरमशरीरी भ० बाहुबली (गाण्डीवम्, २३ फरवरी १९८१)
१५. मेरे जन्मदाता वर्णजी (श्री गणेशप्रसाद वर्ण स्मृति—ग्रन्थ, १९७४)
१६. मंगल स्वरूप गुरुजी (गुरु गोपालदास वरैया स्मृति—ग्रन्थ, १९६७)

सिद्धान्ताचार्य पं. फूलचन्द शास्त्री स्मृति व्याख्यानमाला
(श्री गणेश वर्णी दिगम्बर जैन संस्थान, वाराणसी, तथा
सिद्धान्ताचार्य पंडित फूलचन्द शास्त्री फाउंडेशन द्वारा प्रवर्तित)

१. प्रथम पुष्ट

इस व्याख्यानमाला का प्रथम पुष्ट पूज्य पंडित जी के जन्म दिवस दिनांक ११-४-१९६३ को जैन निकेतन परिसर, वाराणसी में स्थित संस्थान भवन में समर्पित किया गया। “भारतीय मनीषा को शौरसेनी जैनागम साहित्य की देन” विषय पर सुप्रसिद्ध वरिष्ठ विद्वान् प्रोफेसर भोलाशकर व्यास ने अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। इस समारोह की अध्यक्षता काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के वरिष्ठ प्रोफेसर एवं कला संकायाध्यक्ष डा. लल्लन जी गोपाल ने की।

२. द्वितीय पुष्ट

इस व्याख्यानमाला का द्वितीय आयोजन पूज्य पंडितजी की पुण्यतिथि पर दिनांक २६ से ३१ अगस्त १९६३ तक किया गया। सुप्रसिद्ध विद्वान् पं. जवाहरलाल जी शास्त्री, भीण्डर (उदयपुर, राजस्थान) ने (क) आयुकर्मः एक अनुशीलन, (ख) क्षायिक-सम्यक्त्व, (ग) मेरी सैद्धान्तिक शंकायें और स्व. पं. फूलचन्द शास्त्री के समाधान पर तीन व्याख्यान दिये। इस व्याख्यानमाला का उद्घाटन करते हुये प्रख्यात विद्वान् पदमभूषण पं. बलदेव उपाध्याय ने शास्त्रों का प्रमाण देते हुये कहा कि यह जैन धर्म के लिये गौरव की बात है कि इस देश का “भारत” नाम प्रथम जैन तीर्थकर ऋषभदेव के ज्येष्ठ पुत्र “भरत” के नाम से विख्यात हुआ। इतना ही नहीं भारत वर्ष का एक प्राचीन नाम “अजनाभ” भी था। यह नाम भी इन्हीं प्रथम तीर्थकर ऋषभ के पिता “नाभिराय” के नाम पर प्रसिद्ध था। प्रो. भोलाशंकर व्यास, प्रो. हरिहरनाथ त्रिपाठी, प्रो. उदयचन्द्र जैन, प्रो. राजाराम जैन आदि ने भी अपने विचार प्रकट किये।

३. तृतीय पुष्ट

इस व्याख्यानमाला का तीसरा आयोजन दिनांक २८ अगस्त १९६४ को संस्थान भवन में आयोजित हुआ। इसके अंतर्गत सुप्रसिद्ध विद्वान् तथा वैज्ञानिक विचारधारा के धनी प्रो. लक्ष्मीचन्द्र जैन, जबलपुर ने “जैनधर्म और आधुनिक विज्ञान” विषय पर दो व्याख्यान प्रस्तुत किये। सभा का उद्घाटन प्रो. बी.एस. शुक्ला, पूर्व कुलपति, गोरखपुर विश्वविद्यालय ने किया तथा इसकी अध्यक्षता प्रो. पी. कृष्णा, रेक्टर, कृष्णामूर्ति फाउंडेशन, राजघाट ने की। इनके अतिरिक्त जिन विद्वानों ने अपने विचार प्रस्तुत किये उनमें प्रमुख थे—प्रो. खुशालचन्द्र जी गोरावाला, प्रो. रेवती रमण पाण्डेय, प्रो. राधेश्यामधर द्विवेदी, डा. ब्रह्मनन्द त्रिपाठी, डा. अरुण कुमार मिश्रा, डा. अशोक सिंह इत्यादि।

४. चतुर्थ पुष्ट

व्याख्यानमाला की चतुर्थ कड़ी में प्राकृत भाषा में रचित प्राचीनतम् ग्रन्थ “षट्खण्डागम्” का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन” विषय पर, कलकत्ता विश्वविद्यालय से पधारे भाषा विज्ञान विभाग के अध्यक्ष प्रो. सत्यरंजन बनर्जी के दो दिवसीय व्याख्यानों का आयोजन दिनांक ३१ अगस्त एवं १ सितम्बर १९६६ को किया गया। इस व्याख्यानमाला की अध्यक्षता गाँधी विद्या संस्थान, राजघाट, वाराणसी के निदेशक एवं जैन विश्व भारती, लाडनूँ (राजस्थान) के पूर्व कुलपति प्रो. रामजी सिंह ने की।

५. पाँचवाँ पुष्ट

व्याख्यानमाला की पाँचवीं कड़ी के रूप में वयोवृद्ध विद्वान् प्रो. (डा.) एम.डी. वसंतराज (अब दिवंगत) द्वारा २ तथा ३ सितम्बर १९६६ को संस्थान भवन, वाराणसी में तीन व्याख्यान प्रस्तुत किये गये। इनका विषय था “गुरु परंपरा से प्राप्त जैन आगम”। कन्नड़ भाषी होते हुये भी डा. वसंतराज जी ने अपनी विषयवस्तु को बड़ी सफलतापूर्वक उपस्थित विद्वत् वर्ग तक पहुँचाया। अपने इन महत्वपूर्ण व्याख्यानों में नई धारणाओं की स्थापना करते हुये उन्होंने उनका सफलतापूर्वक प्रभावीकरण किया।

६. छठा पुष्प

व्याख्यानमाला का छठा पुष्प पल्लवित किया प्रो. (डा.) राजाराम जैन ने। उन्होंने २६-३० सितम्बर २००१ को “भारतीय इतिहास के निर्माण में जैन ग्रन्थ प्रशस्तियों एवं शिलालेखों का योगदान” विषय पर श्री गणेश वर्णी शोध संस्थान, वाराणसी में दो व्याख्यान दिये। प्रो. राजाराम जी ने प्रारम्भिक लेखनोपकरण एवं अन्य सामग्रियों के उद्भव एवं विकास पर रोचक सामग्री प्रस्तुत की। इस आयोजन का उद्घाटन भारत कला भवन के पूर्व निदेशक एवं ज्ञान प्रवाह के मानक निदेशक प्रो. आर. सी. शर्मा ने किया तथा मुख्य अतिथि की भूमिका निभायी काशी विद्यापीठ के इतिहास विभागाध्यक्ष प्रो. परमानन्द सिंह ने।

७. सातवाँ पुष्प

व्याख्यानमाला का सातवाँ पुष्प श्री धवल तीर्थ, श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) में परम पूज्य स्वस्ति श्री चारुकीर्ति जी भट्टारक स्वामी के सान्निध्य में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के विद्वान् प्रो. पद्मनाभ एस. जैनी के द्वारा कारंजा से प्राप्त पाँडुलिपि “चौरासी बोल” पर आधारित होगा। यह २० अक्टूबर २००४ को प्रसिद्ध विद्वान् पं. धन्य कुमार जी भोरे की अध्यक्षता में संपन्न होगा।

LATE SIDDHANTACHARYA PANDIT PHOOLCHANDRA SHASTRI

An Introduction

Panditji was born in the village of Silawan, District Lalitpur on April 11th, 1901. Panditji did not let financial hardships and sufferings/difficulties of life detour him from his path of self-knowledge. He attained the highest pinnacle of knowledge and it is difficult to find an equal to him in the serving of Jain literature. Pandit Phoolchandra Shastri and his two counterpoise/colleagues namely Pandit Kailash Chandra ji and Pandit Jaganmohan Lalji, were famously known as "Ratnatrayi". Pandit Kailash Chandraji Shastri wrote "I have acquired canonical knowledge only through reading the translations by Pandit Phool Chandra Shastri". Pandit Jaganmohan ji Shastri wrote for Pandit Phool Chandra Shastri that he is only four years older to me in age but hundreds of years older in knowledge.

Panditji has been a part of many social and political changes/reforms/agitations, some of which were initiated by him. He was an active member of the Indian National Congress prior to India independence. He served the Congress and the nation in the capacity of a district level office-bearer at Bina, Sagar, Solapur and Amrawati, congress committees. At Amrawati he held the post of joint secretary. He was also a part of the Congress conventions at Yavatmal, Poona and Natepute. He took an active part in the "Quit India" movement and also served in jail in 1941. Throughout his life Panditji wore Khadi and was a Swadeshi activist. After India got its independence, Panditji left politics and devoted his entire life to the worship of literature.

Through many social movements he opposed the many evil practise and customs prevalent in Jain society. Among his many achievements, right of entry for Dassa Community (an outcast) into the temples is a landmark in itself. He opposed the unnecessary expenditure in the name of religion especially on "Gajraths". On January 26th, 1950 "The Harijan Temple Entry Act" was passed, which met with great resistance. Panditji through his writings supported the bill. He reminded the people that Jain society and culture does not believe in a cast system at all.

In his lifetime Panditji established many institutions and worked for their development. A list of these institutions and his various literary works is presented below. There are three main canonical texts (scriptures) of Jains; these are the detailed commentaries on Satkhandagam named as, Dhavala, Jaidhavala, and Maha-Dhavala. These manuscripts are written in Prakrit language, and were kept hidden in the temples of Karnataka for thousand of years. Due to the untiring efforts of Panditji and many other scholars, the knowledge of these manuscripts enriched the lives of millions of people. Panditji has been instrumental in making available/translating these manuscripts in Hindi. None could equal his mastery over these manuscripts.

Panditji was an epitome of simple living and high thinking. Humility was ingrained deeply in his nature. Proud did not touch him at all. Panditji was ever ready to extend a helping hand to one and all. He had a soft corner for students and taught many of them in a self-less manner and made them self reliant and independent. He stood unfazed in the face of stiff opposition and was a very self-respecting man.

1. Father	Late Singhai Daryavlalji Jain
2. Mother	Late Shrimati Janaki Bai
3. Birth date	April 11th, 1901
4. Birth Place	Silavan, Distt. Lalitpur (U.P.)
5. Marriage	Year 1923
6. Education	Visharad Shri Mahavir Digamber Jain Pathshala, Sadhumal, Distt.Lalitpur, (U.P.) in 1920 Siddhant Shastri, Shri Gopal Digamber Jain Vidyalaya, Muraina (1921-22)

7. Teaching and other works:

- (i) Lecturer, Jain Darshan, Kashi Hindu Vishvavidyalaya and Syadvad Digamaber Jain Mahavidyalaya, Varanasi. 1924-1928
- (ii) Principal in Bina Mahavidyalaya around 1930.
- (iii) Co-editor, Satkhandagam, Jain Sahityodharak Nidhi/Fund Vidisha, M.P. Place Amrawati – Maharashtra. 1937-1940
- (iv) Editor – Kashayapahud Shri Digamber Jain Sangh, Mathura, Place- Varanasi 1941-83. After that decided not to take up any service but continued to serve Jain Canonical Literature unabatedly as a free lance writer.

8. Political and social works:

- (i) Active member of Indian National Congress from 1926-42
- (ii) Office Bearer of District Congress of Bina and Sagar from 1928-1933.
- (iii) Office Bearer of Solapur District Congress from 1933-1938.

- (iv) Joint Secretary of Amrawati Congress from 1938-1940.
- (v) Imprisoned in 1941.
- (vi) Obtained the right to worship in the temples for Dassa (an out caste community) at the Kurawali convention of Parwar Jain Society.
- (vii) Opposed the extravaganza and unnecessary expenses in functions like "Gajrath" (Elephant driven chariots) and supported the use of this money to spread the jain canons and literature.

9. Important Honours and awards:

- (i) President, All India Digamber Jain (Vidvat Parishad) Scholistic Society, Dronagiri, 1955.
- (ii) Conferred the title of "Siddhantacharya" by Dr. Anantshayanam Ayangar, Governor of Bihar, at the Diamond Jubilee celebrations of Jain Siddhant Bhawan, Aara (1962).
- (iii) Conferred the title of "Siddhant Ratna" by the Hon. Vice President of India, Dr. B.D. Jatti, on the occasion of 2500th Nirvana celebrations of Lord Mahavira.
- (iv) Felicitation volume presented to him in 1985 in the august presence of Acharya Shri Vidyanandji Muni.
- (v) A silver plaque was presented to him in 1987 by the All India Digambar Jain Mahasangha.
- (vi) Honoured with the "Prakrit Jnan Bharti" Award in the august presence of Swasthi Shri Charukeerti Bhattacharjee Maha Swamiji at the First National Prakrit Conference, Bangalore 1990

- (vii) All India Mumukshu Samaj honoured him with a sum of Rs. 1 lac in 1990 at the Jaipur Panch Kalyanak Pratishtha.

10. Institutions Established:

- (i) Founding Member and first working joint-secretary of All India Digamber Jain Vidvat Parishad, 1944.
- (ii) Founding Member and Secretary, 1946, Shri Sanmati Jain Niketan, Naria, Varanasi.
- (iii) Founding Joint Secretary and Editor, 1944, Shri Ganesh Prasad Varni Jain Granthmala, Varanasi.
- (iv) Founding Member, 1946, Shri Ganesh Varni Inter College, Lalitpur, U.P.
- (v) Founder, 1971, Shri Ganesh Varni Digamber Jain (Research) Institute, Varanasi.

A SUMMARY OF IMPORTANT WORKS OF PANDITJI

Original Books:

1. Jain Dharma Aur Varna Vyavastha – Bharatvarshiya Digamber Jain Parishad, Delhi, 1945.
2. Vishvashanti Aur Aparigrahvaad – Shri Ganesh Varni Granthmala, Varanasi, 1946.
3. Jain Tatvamimansa – Ashok Prakashan Mandir, Varanasi, 1960.
4. Jain Tatva Mimansa (revised and extended edition) – Ashok Prakashan Mandir, Varanasi, 1978; (third revised edition), - Siddhantacharya Pandit Phoolchandra Shastri Foundation, Roorkee, 1996.
5. Varna, Jati Aur Dharma – Bhartiya Jnanpeeth. 1963; Reprinted many times since then.
6. Jain Tatva Samiksha ka Samadhan – Pandit Todarmal Smarak Trust, Jaipur, 1987.
7. Akinchitkar, Ek Anushilan – Ashok Prakashan Mandir, Varanasi, 1990.
8. Parvar Jain Samaj ka Itihaas – Bharatvarshiya Digamber Jain Parvar Sabha, Jabalpur, 1992.

Edited Journals:

1. Shanti-Sindhu – Acharya Shanti Sagar Saraswati Bhawan, Natepute (Solapur), 1935-37.
2. Jnanodaya – Bhartiya Jnanpeeth, Kashi, 1949-52.

Books Edited/Translated/Commentary:

1. Prameyratnamala – Chaukhamba Sanskrit Series, Banaras, 1928.
2. Aalappaddhati – Shri Sakal Digamber Panchan, Natepute (Solapur), 1934.
3. Saptatikaprakarana (Edited with Hindi commentary) – Aatmanand Jain Pracharak Pustakalaya, Agra, 1948.
4. Tattvarth Sutra (Edited with Hindi commentary) – Ganesh Prasad Varni Jain Granthamala, Varanasi, 1950; Shri Ganesh Varni Sansthan, Varanasi, 1981.
5. Panchadhyayi (Hindi commentary) – Ganesh Prasad Varni Granthamala, Varanasi, 1950.
6. Jnanpeeth Pujanjali – Bhartiya Jnanpeeth Prakashan, Kashi, (second edition) 1957, 1977, 1982.
7. Sarvarthsiddhi – (edition and translation) – Bhartiya Jnanpeeth, New Delhi, 1960, 1985.
8. Samaysaarkalash (with meanings) – Shri Digambar Jain Swadhyay Madir Trust, Songarh, 1964.
9. Shri Kahanji Swami Abhinandan Granth (Editor) – Digamber Jain Mumukshu Mandal, Mumbai, 1964.
10. Khaniya Tatva-Charcha (Book One) – Acharya Kalp Pandit Todarmal Granthmala, Jaipur, 1967.
11. Khaniya Tatva-Charcha (Book Two) – Acharya Kalp Pandit Todarmal Granthmala, Jaipur, 1967.
12. Samyagyan-Dipika (Edited and translated) – Shri Digamber Jain Mumukshu Mandal, Bhavnagar, 1970.
13. Labdhisaar-Kshapanasaar – Shrimad Rajchandra Aashram, Agaas, 1980.

A SUMMARY OF IMPORTANT WORKS OF PANDITJI

Original Books:

1. Jain Dharma Aur Varna Vyavastha – Bharatvarshiya Digamber Jain Parishad, Delhi, 1945.
2. Vishvashanti Aur Aparigrahvaad – Shri Ganesh Varni Granthmala, Varanasi, 1946.
3. Jain Tatvamimansa – Ashok Prakashan Mandir, Varanasi, 1960.
4. Jain Tatva Mimansa (revised and extended edition) – Ashok Prakashan Mandir, Varanasi, 1978; (third revised edition), - Siddhantacharya Pandit Phoolchandra Shastri Foundation, Roorkee, 1996.
5. Varna, Jati Aur Dharma – Bhartiya Jnanpeeth. 1963; Reprinted many times since then.
6. Jain Tatva Samiksha ka Samadhan – Pandit Todarmal Smarak Trust, Jaipur, 1987.
7. Akinchitkar, Ek Anushilan – Ashok Prakashan Mandir, Varanasi, 1990.
8. Parvar Jain Samaj ka Itihaas – Bharatvarshiya Digamber Jain Parvar Sabha, Jabalpur, 1992.

Edited Journals:

1. Shanti-Sindhu – Acharya Shanti Sagar Saraswati Bhawan, Natepute (Solapur), 1935-37.
2. Jnanodaya – Bhartiya Jnanpeeth, Kashi, 1949-52.

Books Edited/Translated/Commentary:

1. Prameyratnamala – Chaukhamba Sanskrit Series,
Banaras, 1928.
2. Aalappaddhati – Shri Sakal Digamber Panchan,
Natepute (Solapur), 1934.
3. Saptatikaprakarana (Edited with Hindi commentary)
– Aatmanand Jain Pracharak Pustakalaya, Agra,
1948.
4. Tattvarth Sutra (Edited with Hindi commentary) –
Ganesh Prasad Varni Jain Granthamala, Varanasi,
1950; Shri Ganesh Varni Sansthan, Varanasi, 1981.
5. Panchadhyayi (Hindi commentary) – Ganesh Prasad
Varni Granthamala, Varanasi, 1950.
6. Jnanpeeth Pujanjali – Bhartiya Jnanpeeth Prakashan,
Kashi, (second edition) 1957, 1977, 1982.
7. Sarvarthsiddhi – (edition and translation) – Bhartiya
Jnanpeeth, New Delhi, 1960, 1985.
8. Samaysaarkalash (with meanings) – Shri Digambar
Jain Swadhyay Madir Trust, Songarh, 1964.
9. Shri Kahanji Swami Abhinandan Granth (Editor)
– Digamber Jain Mumukshu Mandal, Mumbai, 1964.
10. Khaniya Tatva-Charcha (Book One) – Acharya
Kalp Pandit Todarmal Granthmala, Jaipur, 1967.
11. Khaniya Tatva-Charcha (Book Two) – Acharya
Kalp Pandit Todarmal Granthmala, Jaipur, 1967.
12. Samyagyan-Dipika (Edited and translated) – Shri
Digamber Jain Mumukshu Mandal, Bhavnagar, 1970.
13. Labdhisaar-Kshapanasaar – Shrimad Rajchandra
Aashram, Agaas, 1980.

14. Aatmanushasan – Shri Ganeshvarni Digamber Jain Sansthan, Varanasi, 1983.
15. Satkhandagama (Dhavala) Volume 1 – 16, a treatise on Jain Philosophy, size 20x30 Cm., about 8000 pages, published for the first time on the basis of old palm leaf manuscripts, Edited with Dr. H.L. Jain and Pandit H.L.Jain Shastri, also translated Six Volumes, Publishers: S.S.L.C. Jain S. Fund, Vidisha, M.P. and J.S.S. Sangha, Solapur in the years 1939-1959 and 1973-1985.
16. Mahabandha, Volume 2-7, a treatise on Jain Philosophy, size 20x30 Cm., about 3000 pages, published for the first time on the basis of old palm leaf manuscripts, translated and edited from the original in Prakrit language, Publishers: Bhartiya Jnanapeeth, New Delhi. 1944-1970
17. Kasayapahuda (Jai-Dhavala), Volume 1-16, a treatise on Jain Philosophy, size 20x30 Cm., about 7500 pages, published for the first time from the original in Prakrit language, Publishers: Bharatvarshiya Digamber Jain Sangha, Mathura, U.P. 1941-1986